भगवान के चरणों पर " ताजा पुष्प "

पुष्प, नैवेध, फल पुजा विधी भाग :- 1



संकलन

मुनि १०८ पावन कीर्ति

पुष्पपूजन तथा गन्धलेपन का प्रायः एक ही विषय है। जिस तरह भगवान् के चरणों पर गन्धलेपन किया जाता है उसी तरह पुष्प भी चरणों पर चढ़ाये जाते है। कितनी शंकाओं का समाधान गन्धलेपन लेख में हो सकेगा। इसलिये इस लेख में विशेष बातों को न लिखकर आवश्यक बातें लिख देते है। पुष्प पूजन से हमारा असली अभिप्राय चरणों पर चढ़ाने का है। परन्तु इसके पहले सचित पुष्पों को चढ़ाना चाहिये या नहीं? इस प्रश्न का समाधान करना जरूरी हैं। यही कारण है कि कितने लोग तो इस समय भी प्रायः सचित पुष्पों से पूजन करते हैं और कितने चावलों को केशर के रंग से रंग कर उन्हें पुष्प पूजन की जगह काम में लाते है। यह सम्प्रदाय योग्य है या अयोग्य, इस विषय का समाधान इसी ग्रन्थ के भगवान के चरणों पर "ताजा पुष्प" कल्पना नामक लेख से हो सकेगा। पुष्प पूजन के विषय में शास्त्रों की आज्ञा का खुलासा किये देते है।



जिस तरह पंचामृताभिषेक करना शास्त्रों में लिखा हुआ है उसी तरह गन्धलेपन अर्थात् जिन् भगवान् के चरणों पर केशर (चन्दन) का लगाना और पुष्प भगवान् के चरणों पर चढ़ाना लिखा है। लिखा हुआ ही नही है किन्तु प्रतिष्ठादि क्रियाओं में गन्धलेपनादिकों के बिना प्रतिमाओं में पूज्यता ही नहीं आती।

इस लेख में विशेष बातो को न बताकर शास्त्र के प्रमाण आगे दे रहे है।

1

शास्त्र तत्त्वार्थवार्तिक (भ. अकलंक)

पुष्प :- वनस्पतिनामकर्मोदयापादितविशेषस्य वृक्षस्थ जीव पुदगलसमुदायस्य पुष्पमिति व्यपदिश्यते २/८

अर्थ :- वनस्तपति नामकर्म का जिस जीवके उदय है वह जीव और पुद्गल का समुदाय पुष्प कहा जाता है। वृक्ष के द्वारा व्याप्त होने से वह पुष्प पुद्गल वृक्ष कहा जाता है।





2

ग्रन्थ-षट्खण्डागम - ग्रंथकर्ता - आचार्य पुष्पदंत / आचार्य भूतबली

समय : १वीं शताब्दि - अन्य कृति - जयधवला आदि

पुस्तक-१६ मोक्षानुयोगद्वार (मंगलाचरण)

महुवरमहुवरवाउलवियसियसुरहिंगंधमल्लेहि।

मल्लिजिणमच्चियूण य मोक्खणुयोगो परुवेमो ॥१॥

अर्थ - मधु को करने वाले भ्रमरों से व्याकुल ऐसे विकसित, धवल और सुगन्धित पुष्पमालाओं के द्वारा मल्लि जिनेन्द्र - की पूजा करके मोक्ष अनुयोगद्वार की प्ररुपणा करते है ॥१॥

3

पुस्तक-१६ कर्मस्थिति अनुयोगद्वार पेज नं. ५१८

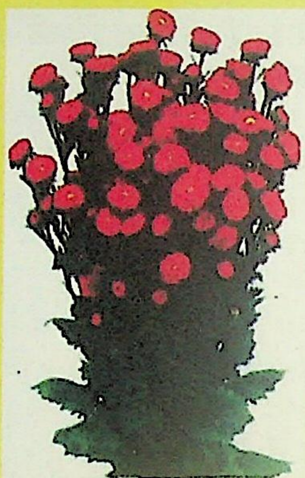
णमिउण पुप्फयंतं सुरहियधवलिद्धपुप्फअंचियच्चलणं ।

कम्मट्ठिदिअणुयोगं वोच्छामि समासदो पयत्तेण ॥१॥

अर्थ - सुगन्धित धवल और समृद्ध पुष्पों द्वारा जिनके चरणों की पूजा की गई है उन पुष्पदन्त जिनेन्द्रको नमस्कार करके मैं प्रयन्तपूर्वक संक्षेपमे कर्मस्थितिअनुयोगद्वार का कथन करता हूं ॥१॥



4



ग्रन्थ पद्मपुराण, ग्रन्थकर्ता - आचार्य रविषेण
पर्व ३२ श्लोक नं. १५९, १६०
सामोदैर्भूदलोद्भूतैः छुष्पैर्यो जिनमर्चति।
विमानं पुष्पकं प्राप्य स क्रीडति यथेप्सितम् ॥१५९॥
भावपुष्पैर्जिनं यस्तु पूजयत्यतिनिर्मलैः ।
लोकस्य पूजनीयोऽसौ जायतेऽत्यन्तसुन्दर ॥१६०॥

अर्थ : जो पृथिवी तथा जलमें उत्पन्न होनेवाले सुगन्धित फूलोंसे जिनेन्द्र भगवान् की अर्चा करता है वह पुष्पक विमान को पाकर इच्छानुसार क्रीड़ा करता है॥१५९॥ जो अतिशय निर्मल भावरुपी फूलों से जिनेन्द्रदेव की पूजा करता है वह लोगोंके द्वारा पूजनीय तथा अत्यन्त सुन्दर होता है ॥१६०॥

5

पर्व - ३८ श्लोक ४४,४५,४६
अथोद्धर्त्य चिरं पादौ तयोर्निर्झरवारिणा ।
गन्धेन सीतया लिप्तो चारुणा पुरुभावया ॥४४॥
आसन्नानां च वल्लीनां कुसुमैर्वनसौरभैः ।
लक्ष्मीधरार्पितैः शुक्लै शतितान्तरमर्चितो ॥४५॥
ततस्ते करयुग्माब्जमुकुलव्राजितालिकाः ।
चक्रुपौगीश्वरी भक्त्या वन्दनां विधिकोविदा ॥४६॥

अर्थ - अथानन्तर भक्तिसे भरी सीताने निर्झरके जलसे देर तक मुनियोंके पैर धोकर मनोहर गन्धसे लिप्त किये ॥४४॥ तथा जो वन को सुगन्धित कर रहे थे एवं लक्ष्मणने जो तोड़कर दिये थे, ऐसे निकटवर्ती लताओंके फूलों से उनकी खूब पूजा की, तदनन्तर अंजलिरुपी कमलकी बोड़ियों से जिनके ललाट शोभायमान थे तथा जो विधि-विधान के जाननेमें निपुण थे ऐसे उन सबने भक्तिपूर्वक मुनिराजकी वन्दना की ॥४६॥



6



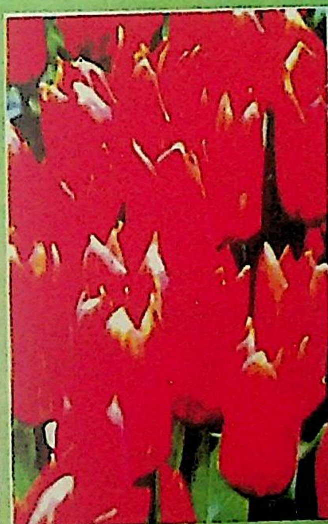
ग्रंथ- भावसंग्रह, ग्रंथकर्ता - आचार्य देवसेन
समय १०वीं शताब्दि, पद्य नं. ४७१
चंदणसुगन्ध लेओ जिणवर चरणेसु जो कुणि भविओ।
लहइ तणु विक्किरिय सहावसुयंधयं अमलं ॥४७१॥

अर्थ - जो भव्य पुरुष भगवान् जिनेन्द्र देव के चरण कमलों पर (जिन प्रतिमा के चरणों पर) सुगंधित चंदन का लेप करता है, उसको स्वर्ग में जाकर अत्यन्त निर्मल और स्वभाव से ही सुगंधित वैक्रियिक शरीर प्राप्त होता है।

अलि चुंविएहिं पुज्जई जिणपयकमलं च जाइमल्लीहिं
सो हवइ सुरवरिंदो रमेइ सुरतरुवर वणेहिं ॥४७३॥

अर्थ - जो भव्य पुरुष भगवान जिनेन्द्रदेव के चरण कमलों की जिनपर भ्रमर घूम रहे हैं ऐसे चमेली, मोगरा आदि उत्तम पुष्पों से पूजा करता है वह स्वर्ग में जाकर अनेक देवों का इन्द्र होता है औप वह वहां पर चिरकालतक स्वर्ग में होने वाले कल्पवृक्षों के वनों में (बगीचों में) क्रीड़ा किया करता है।

7

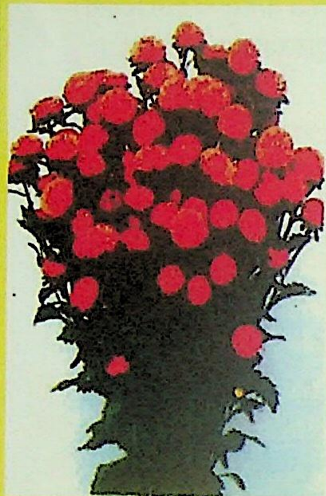


ग्रंथ - वसुनन्दि जिन संहिता
ग्रंथकर्ता - आचार्य वसुनन्दि, समय ११वीं शताब्दि
अनर्चित पदद्वंद्वं कुंकुमादिविलेपनैः।
बिम्बं पश्यति जैनेन्द्रं ज्ञानहीनः स उच्यते ॥

अर्थ - केशरादि के विलेपन से रहित जिन भगवान् के चरण कमलों के दर्शन करने वाला ज्ञान होकर भी ज्ञान हीन समझना चाहिये।

8

ग्रंथ - वसुनंदि श्रावकाचार, ग्रंथकर्ता -
आचार्य वसुनन्दि समय ११वी शताब्दि



कप्पूरकुंकुमायरुतरुक्कमिस्मेण चंदणसेण।
वरबहुलपरिमलामोयवासियासासमूहेण॥
वासाणुमग्ग संपत्तामयमत्तालिरावमुहलेण।
सुरमउऽघडियचरणं भत्तिए समलहिज्ज जिणं ॥

अर्थ - देवताओं के मुकुट से घर्षित जिन भगवान् के चरण कमलों पर कर्पूर, केशर, अगुरु और मलयागिरि चन्दन आदि अतिशय सुगन्धित द्रव्यों से मिला हुआ, अत्यन्त सुगन्ध से दशों दिशाओं के समूह को सुगन्धित करने वाला और अपनी स्वाभाविक सुगन्ध से आई हुई भ्रमरों की श्रेणि के शब्दों से शब्दायमान पवित्र चंदन के रस से भक्तिपूर्वक लेप करना चाहिये।

9

ग्रंथ - मूलाचार भाग - १
ग्रंथकर्ता - आचार्य श्रीमद् वट्टकेर
आचार्य श्री वसुनन्दि सिद्धान्तचक्रवर्ती टीका षडावश्यकाधिकार,
गाथा नं. ५७८ पेज नं. ४२९
पूजा कर्म - जिन अक्षर आदिकों के द्वारा अरिहंत देव आदि पूजे जाते है - अर्चेजाते है ऐसा बहुवचन से उच्चारण कर उनको जो पुष्पमाला चन्दन आदि चढाये जाते है वह पूजा कर्म कहलाता है।



10



भगवान उमास्वामी श्रावकाचार में यों लिखते हैं :-
पद्मचम्पजात्यादिस्त्रग्भिः सम्पूजयेज्जिनान् ।
अर्थात - कमल, चम्पक और जाति पुष्पादिकों से जिन भगवान की पूजन करनी चाहिये।

11



श्री वसुनन्दि श्रावकाचार में लिखा है कि :-
मालियकयं बकणरियं पयासोयबउलतिलएहिं ।
मन्दारणायतम्पयपउमुप्पल सिन्दुवारेहिं ॥
कणवीर मल्लियाइ कचणारमयकुन्दकिवडराएहिं ।
सुखणजजुहियापारिजासवणढगेरेहिं ॥
सोवएणरुवमेहिं य सुवादामेहिं बहुप्पयारेहिं ।
जिणपनसंकयजुयलं पूजिज्ज सुरिन्दंसयमहियं ॥
अर्थात - मालती, कदम्ब, सूर्यमुखी, अशोक, बकुल, तिलक, मन्दार, नागचम्पा, कमल, निर्गुंडीं, कणवीर मल्लिका, कचनार, मचकुन्द, किंकर, कल्पवृक्ष के पुष्प, परिजात और सुवर्ण चांदी के पुष्पादिकों से पूजनीय जिन भगवान के चरण कमलों की पूजन करना चाहियें।

12



इन्द्रनन्दि पूजासार में कहा है :-
ॐ सिन्दुवारैर्मन्दारैः कुन्दैरिन्दीवरैः शुभैः ।
नन्द्यावर्त्तादिभिः पुष्पैः प्रार्चयामि जगद्गुरुम् ॥
अर्थात् - सिन्दुवार, मन्दार, पुष्प, कुन्द, कमल और नन्द्यावर्तादि उत्तम २ फूलों से जगदगुरु जिन भगवान् की पूजा करता हूं।

13



धर्मसार में लिखा है किः-
इतपुष्पधनुर्वाणसर्वज्ञानां महात्मनाम् ।
पुष्पैः सुगन्धिभिर्भक्त्या पदयुग्मं समर्चये ॥
अर्थात् - कामदेव के धनुष को नाश करने वाले जिन भगवान् के चरण कमलों को भक्ति पूर्वक कमल, केतकी, चमेली, कुन्द, गुलाब, केवड़ा, मन्दार, मल्लि, बकुल आदि नाना तरह के सुगन्धित पुष्पों से पूजता हूं।



14

पण्डित आशाधर कहते हैं कि :-

सुजातिजातीकुमुदाब्जकुन्दै-
मन्दारमल्लीबकुलादिपुष्पैः।
मत्तालिमाला मुखरैर्जिनेन्द्र-
पादारविन्दं द्वयमर्चयामि ॥

अर्थात - उन्मत्त भ्रमरों की श्रेणी से शब्दायमान, जाती कुमुद, कमल, कुन्द, मन्दार, मल्लिका पुष्प, बकुल केवड़ा, कचनार आदि अनेक प्रकार के फूलों से जिन भगवान् के चरण कमलों की पूजन करता हूं।

15

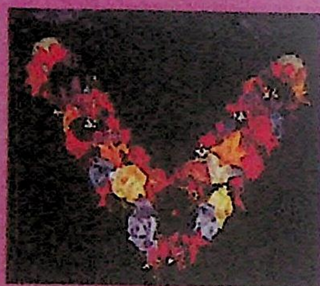
सूक्ति मुक्तावलि में :-

यः पुष्पैर्जिनमर्चति स्मितसुर-
स्त्रीलोचनैः सोऽर्च्यते।

अर्थात - जो जिन भगवान् की फूलों से पूजा करते हैं देवाङ्गनाओं के नेत्रों द्वारा पूजे जाते हैं।
अर्थात पुष्प पूजन के फल से स्वर्ग में देव होते हैं।



16



श्री त्रिवर्णाचार में लिखा है कि :-

जिनाङ्घ्रि स्पर्शितां मालां निर्मले कंठदेशके।

अर्थात - जिन भगवान् के चरणों पर चढ़ी हुई पुष्प माला को अपने पवित्र कंठ में धारण करना चाहिये।

17

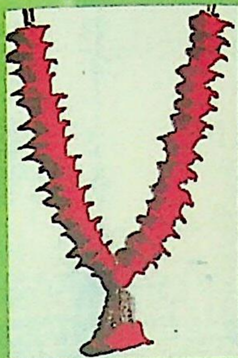
पं. आशाधर प्रतिष्ठा पाठ में लिखते हैं :-

जिनाङ्घ्रिः स्पर्शमात्रेण त्रैलोक्यानुग्रहक्षमाम्
इमां स्वर्गरमादूतीं धारयामि वरस्रजम् ॥

अर्थात - जिन भगवान् के चरणों में स्पर्श होने मात्र से त्रिभुवन के जीवों पर अनुग्रह करने में समर्थ और स्वर्ग की लक्ष्मी के प्राप्त कराने में प्रधान दासी, पवित्र पुष्प माला को कंठ में धारण करता हूं।



18



इसी प्रतिष्ठा पाठ में और भी..
श्री जिनेश्वर चरण स्पर्शादनर्घ्या पूजा जाता सा माला महाभिषेकावसाने बहुधनेन ग्राह्या भव्यश्रावकेनेति।
अर्थात - जिन भगवान् के चरण कमलों के स्पर्श से अमोल्य पूजन हुई है। इसलिये वह पुष्पमाला महाभिषेक की समाप्ति होने पर अन्त में बड़े भारी धन के साथ भव्य पुरुषों को ग्रहण करनी चाहिये।

19

वृतकथा कोष में श्री श्रुतसागर मुनि लिखते है :-
तत्प्रशनाच्छेष्ठिपुत्रीति प्राह भद्रेश्रृणु ब्रुवे।
व्रतं ते दुर्लभं येनेहामुत्र प्राप्यते सुखम् ॥
शुल्कश्रावणमासस्य सप्तमीदिवसेऽर्हताम् ।
स्नापनं पूजनं कृत्वा भक्त्याष्टविधमूर्तिजतम् ॥
ध्रीयते मुकुटं मुर्धि रचितं कुसुमोत्करैः ।
कण्ठे श्रीवृषभेशस्य पुष्पमाला च ध्रीयते ॥
अर्थात - सेठ की पुत्री ने प्रश्न को सुनकर आर्यिका कहती हुई। हे पुत्रि मैं तुम्हारे कल्याण के लिए व्रत का उपदेश कहती हूं। उस व्रत के प्रभाव से इसलोक में तथा परलोक में दुर्लभ सुख प्राप्त होता है। उसे तुम सुनो। श्रावण सुदि सप्तमी के दिन जिनभगवान का अभिषेक तथा आठ प्रकार के द्रव्यों से पूजन कर के वृषभजिनेन्द्र के मस्तक पर नाना प्रकार के फूलों से बनाया हुआ मुकुट तथा कंठ में पुष्पों की माला पहनानी चाहिये। विशेष विधि इस जगह उपयोगी न होने से नही लिखी है :-



20

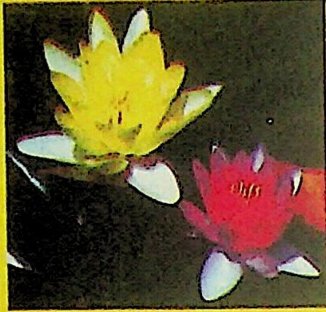
भगवान इन्द्रनन्दि पुजासार में लिखते है :-
जैनक्रमाब्जयुगयोग विशुद्धगन्ध-
सम्बन्धबन्धुरविलेपपवित्रगात्रः ।
तेनैव मुक्तिवश कृत्तिलकं विधाय- श्रीपादपुष्पधरणं शिरसा वहामि ॥
अर्थात - जिन भगवान के चरण कमलों पर चढ़ने से पवित्र गन्ध के सम्बन्ध से मनोहर विलेपन करके पवित्र शरीर वाला मैं, उसी चन्दन से मुक्ति के कारण भूत तिलक को करके चरणों पर चढ़े हुवे पुष्पों को मस्तक पर धारण करता हूं।



21

श्री यशस्तिलक में भगवत्सोमदेव महाराज लिखते है :-

पुष्पं त्वदीय चरणार्चन पीठसङ्गा
चूडामणि भवति देव जगत्त्रयस्य ।
अस्पृश्यमन्यशिरसि स्थितमप्यस्ते
को नाम साम्यमनुशास्तु रवीश्वराद्यैः ॥



अर्थात - हे भगवान् ! तुम्हारे चरणों की पूजन के सम्बन्ध से पुष्प भी तीन जगत का चूडामणि होता है। और दूसरों के मस्तक पर भी चढ़ा हुआ अपवित्र हो जाता है। इसलिए इस संसार में ऐसा कौन पुरुष है जो सूर्यादि देवों को आपके समान कह सके। अर्थात् जगत में आपकी समानता कोई नहीं कर सकता।

22

श्री आराधना कथा कोष में...

तद्वागोपालकः सोऽपि स्थित्वा श्रीमज्जिनाग्रतः ।
भोः सर्वोत्कृष्ट । मे पद्मं ग्रहाणेवमिति स्फुटं ॥
उक्ता जिनपादाब्जोपरिक्षिप्त्वाशु पङ्कजम् ।
गतो मुग्धजनानां च भवेत्सत्कर्म शर्म्मदम् ॥

अर्थात - किसी समय कोई गोपालक जिनभगवान के आगे खड़ा होकर हे सर्वोत्तम ! मेरे इस कमल को स्वीकार करो । ऐसा कह कर उस कमल को जिन भगवान् के चरणों पर चढ़ा करके शीघ्र चला गया। ग्रन्थकार कहते है कि उत्तम कर्म मूर्ख पुरुषों को भी अच्छे फल का देने वाला होता है।



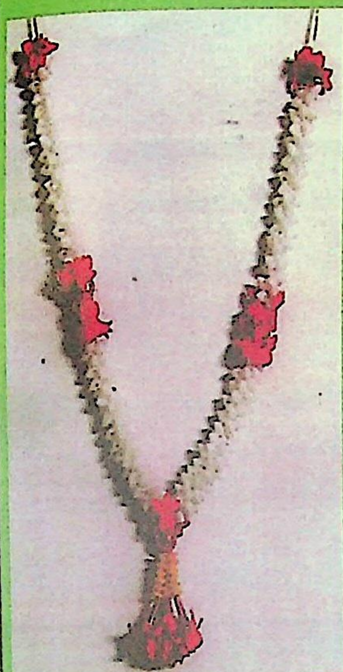
23



आदि पुराण में लिखा है कि :-

यथाहिकुलपुत्राणां माल्यं गुरुशिरोधृतम् ।
मान्यमिव जिनेन्द्राङ्घि स्पर्शान्माल्यादिभूषितम् ।

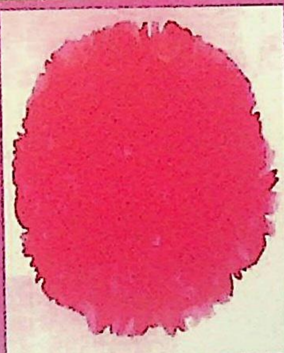
अर्थात - जिस तरह पवित्र कुल के बालकों को अपने बड़े जनों के मस्तक पर की पुष्पमाला स्वीकार करने योग्य है उसी तरह जिन भगवान् के चरणों पर चढ़े हुए पुष्पमाल्य तथा चन्दनादि तुम्हें स्वीकार करने योग्य हैं।



भगवद्गुणभद्राचार्य उत्तरपुराण में यो लिखते है :-
जयसेनापि सुद्धर्म्म तत्रादायंकदा मुदा।
पर्वोपवासपरिम्लानतनुरभ्यर्च्य साऽर्हतः ।
तत्पादपङ्कजाश्लेष पवित्रां पापहां स्त्रजम् ।
चित्रां पित्रेऽदित द्वाभ्यां हस्ताभ्यां विनयानता ॥

अर्थात् - किसी समय पवित्र धर्म को स्वीकार करके, अष्टान्हिका पर्व सम्बन्धी उपवासों से खेद खिन्न शरीर को धारण करने वाली जयसेना जिन भगवान् की पूजन करके भगवान के चरण कमलों पर चढ़ने से पवित्र और पापों के नाश करने वाली पुष्पमाला को विनय पूर्वक अपने दोनों हाथों से पिता के लिये देती है।

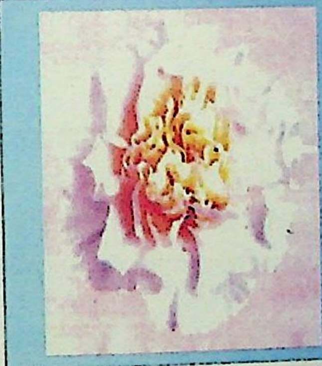
25



पुष्प से पूजन करने का फल
वसुनन्दि श्रावकाचार
पुष्प :- पुष्पोंसे पूजा करनेवाला मनुष्य कमलके समान सुन्दर मुखवाला तरुणीजनोंके नयनोंसे और पुष्पोंकी उत्तम मालाओंके समूहसे समर्चित देहवाला कामदेव होता है।

26

सावयधम्मदोहा
पुष्प :- जो पुष्पोसे जिननाथकी पूजा करता है, उसके भोग कभी कम नहीं पड़ते ।
जैसे सरोवरमें नदीकी सारिणी (नहर) के द्वारा अगाध पानी हो जाता है।



27



सागारधर्मामृत

पुष्पमाला :- पुष्पमाला चढ़ानेसे देवगति सम्बन्धी मन्दारमाला प्राप्त होती है।

28

सावयधम्मदोहा

जिनदेवके चरणों पर पुष्पांजलि :- जिनदेवके चरणोंपर चढ़ाई गई पुष्पांजलिसे उत्तम लक्ष्मीका संयोग होता है।



29



प्रश्नोत्तर श्रावकाचार - आचार्य श्री सकलकीर्ति

पुष्प :- जो भव्य जीव जाती, चम्पा, कमल, केतकी आदिके सुन्दर पुष्पोसे भगवान जिनेन्द्रदेवकी पूजा करते हैं वे स्वर्ग में श्री पूज्य गिने जाते है।

पुष्पांजलि :- जो गृहस्थ भगवान जिनेन्द्रदेवपर पुष्पांजलि क्षेपण करते है वे पुष्पवृष्टिसे भरे हुए उत्तम स्वर्गमें जा विराजमान होते है।

30

धर्मसंग्रह श्रावकाचार

जिन्होंने काम बाणका सर्वथा नाश कर दिया है ऐसे पवित्रात्मा सर्वज्ञ भगवानके चरण कमलकी कमल केवड़ा गुलाब, चमेली, मालती आदि अनेक जातिके मनोहर तथा सुगन्धित फूलों से पूजा करता हूँ।



31



सागार धर्मामृत

दृष्टान्त :- राजगृही नगरीमें एक मेंढक महावीर स्वामीकी पूजाकी इच्छासे केवल एक कमल पत्रको मुहमें दबाकर वैभारगिरिपर्वत जा रहा था, किन्तु दुर्दैववश राजा श्रेणिक के हाथीके पैरके नीचे दबकर मर गया और पूजा करनेकी भावनामात्रसे स्वर्गमें देव हुआ। जब पूजनके संकल्पमात्रसे क्षुद्र मेंढकको इतना विशेष फल मिला तो भक्तिपूर्वक साक्षात जिनपूजन करनेवाले मनुष्यको प्राप्त होनेवाले फलका कहना ही क्या है?

32

सिद्ध पूजा भाषा

सुन्दर सु गुलाब अनूप, फूल अनेक कहे।
श्री सिद्धन पूजन भूप, बहुविधि पुण्य लहे॥
तहां वीर्य अनन्तो सार, यह गुण मनमानो।
संसार समुद्रतैं पार, तारक प्रभु जानो ॥
ॐ ह्रीं णमो सिद्ध परमेष्ठिभ्यो कामबाणविध्वंसनाथ
पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।



33



सिद्ध पूजा

नित्यं स्वदेह-परिमाणमनादिसंज्ञं,
द्रव्यानपेक्षममृतं मरणाद्यतीतम् ।
मन्दारकुन्दकमलादिवनस्पतीनां,
पुष्पैर्यजे शुभतमैर्वरसिद्धतक्रम् ॥
ॐ ह्रीं णमो सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने
कामबाणविध्वंसनाथ पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

34

पंचमेरु पूजा

बरन अनेक रहे महकाय, फूलनसौं पूजौं जिनराय ।
महासुख होय, देखे नाथ परमसुख होय ॥
पांचो मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमाको करौं प्रणाम ।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥
ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो
पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।



35



सोलहकारण पूजा

फूल सुगंध मधुप-गुंजार, पूजौं जिनवर जग-आधार ।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो ॥
दरश विशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थंकर पददाय ।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो ॥
ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यो
कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं ।

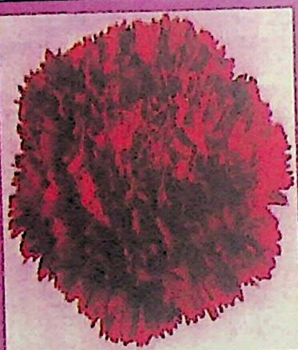
36

दशलक्षण धर्म पूजा

फूल अनेक प्रकार, महकैं ऊरधलोकलौं ।
भव-आताप निवार, दस-लक्षण पूजौं सदा ॥
ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षणा धर्माय
पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।



37



रत्नत्रय पूजा

जनम-रोग निरवार, सम्यक्-रत्न-त्रय भजूं ।
महकैं फूल अपार, अलि गुंजै ज्यों थुति करैं ॥
ॐ ह्रीं सम्यक्‌रत्नत्रयाय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं ।

38

सम्यग्दर्शन पूजा

पुहुप सुवास उदार, खेद हरै मन शुचि करै ॥
सम्यकदर्शन सार, आठ अङ्ग पूजौं सदा ।
ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।



39



अनन्तव्रत पूजा

चम्पा चमेली केतकी पुनि मोगरो शुभ लायके।
केवड़ो कमल गुलाब गैंदा जुही माल बनायके॥
श्रीवृषभ आदि अनन्त जिन पर्यंत पूजों ध्यायके।
करि अनन्तव्रत तप कर्म हनिके लहों शिव सुख जायके।
ॐ ह्रीं श्रीवृषभाद्यनन्तनाथपर्यन्तचतुर्दशजिनेन्द्रेभ्यो
कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं।

40

क्षमावाणी पूजा

पारिजात अरु केतकी, पहुप सुगंध गुलाब।
श्रीजिन-चरण-सरोजकूं, पूज हर्ष चित-चाव।
क्षमा गहो उर जीवड़ा, जिनवर-वचन गहाय।
ॐ ह्रीं अष्टाङ्गसम्यग्दर्शनाय अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय
त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय रत्नत्रयाय
कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं।



41



नवदेवता पूजन

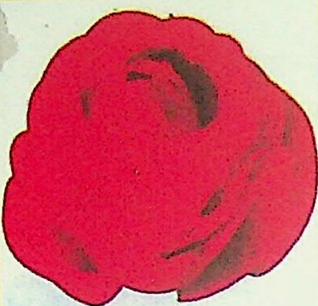
चम्पा चमेली केवड़ा नाना सुगन्धित ले लिये।
भव के विजेता आपको पूजन सुमन अर्पण किये।
नव देवताओं की सदा जो भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि ऋद्धि मंगल पाय शिवकांता वरें।
ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म
जिनागम, जिन चैत्य जिन चैत्यालयेभ्यः
कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

42

समुच्चय चौबीसी पूजा

वर-कञ्ज कदंब कुरंड सुमन सुगन्ध भरे।
जिन अग्रधरौं गुन-मंड, काम कलंक हरे॥
चौबीसों श्रीजिनचन्द, आनन्द-कन्द सही।
पद जजत हरत भवफंद, पावन मोक्ष-मही।
ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय
पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।





43

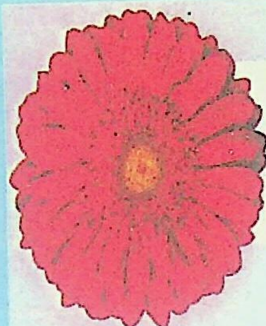
श्री आदिनाथजिन पूजा

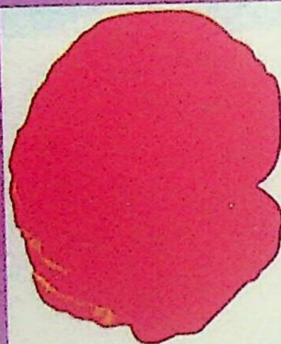
कमल केतकी बेल चमेली, श्रीगुलाबके पुष्प मंगाय।
श्रीजीकेचरणचढावो भविजन, कामवाणतुरत नसिजाय ॥
श्रीआदिनाथके चरण-कमलपर, वलि-वलिजाऊँमनवचकाय।
हो करुणानिधि भव दुःख मेटो, यातैं मैं पूजों प्रभु पाय।
ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय
पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

44

श्री चन्द्रप्रभु पूजा

सुरतरुके शुचि पुष्प मनोहर बरन बरन के लावो।
काम दाह निरवारन कारण श्रीजिनचरण चढ़ावो ।
चञ्चल चितको रोकि चतुर्गति चक्रभ्रमण निरवारो।
चारु चरन आचरण चतुर नर चंद्रप्रभू चित धारो।
ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय
पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा ।





45

श्री वासुपूज्य जिन-पूजा

पारिजात संतान कल्पतरु, जनित सुमन बहु लाई,
मीनकेतु-मन-भंजन-कारन, तुम पद-पद्म चढ़ाई ।
वासुपूज्य वसु-पूज-तनुज-पद, वासव सेवत आई ।
बाल ब्रह्मचारी लखि जिनको, शिव-तिय सनमुख धाई ।
ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय
पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा ।

46

श्रीशान्तिनाथजिन-पूजा

मंदार सरोजं, कदली जोजं, पुञ्ज भरोजं, मलयभरं।
भरि कंचन-थारी, तुम ढिग धारी, मदन-विदारी, धीर-धरं ।
श्रीशान्ति-जिनेशं, नुत-शक्रेशं वृषचक्रेशं, चक्रेशं।
हनि अरि - चक्रेशं, हे गुनधेशं, दयामृतेशं, मक्रेशं ।
ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय
पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा ।



47



श्रीपार्श्वनाथ जिन पूजा

केवड़ा गुलाब और केतकी चुनाइये ।
धार चर्णकि समीप काम को नसाइये।
पार्श्वनाथ देव सेव आपकी करु सदा।
दीजिये निवास मोक्ष भूलिये नहीं कदा ।
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंशनाय
पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा ।

48

श्री महावीर स्वामी पूजा

सुरतरुके सुमन समेत, सुमन सुमन प्यारे।
सो मनमथ-भंजन-हेत, पूजों पद थारे ॥
श्रीवीर महा अतिवीर, सन्मतिनायक हो ।
जय वर्द्धमान गुण-धीर, सन्मति-दायक हो ।
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंशनाय
पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा ।



49



निर्वाणक्षेत्र पूजा

शुभ फूल-रास सुवास-वासित, खेद सब मन की हरौं।
दुख-धाम-काम विनाश मेरो, जोर कर विनती करौं ।
सम्मेदगढ़ गिरनार चम्पा, पावापुरि कैलाशकों ।
पूजों सदा चौबीस जिन, निर्वाणभूमि-निवासकों।
ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विशतितीर्थकर निर्वाणक्षेत्रेभ्यो
पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा ।

50

सरस्वती पूजा

बहुफुल सुवासं, विमल प्रकाशं, आनंदरासं, लाय धरे।
मम काम मिटायो, शीलबढ़ायो, सुखउपजायो दोष हरे।
तीर्थंकरकी धुनि, गणधरने सुनि, अंग रचे चुनि, ज्ञानमई।
सो जिनवर वानी, शिवसुखदानी, त्रिभुवन मानी पूज्य भई ।
ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै कामबाणविध्वंशनाय
पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा ।



51



रविव्रत पूजा

बेला अर मचकुन्द चमेली, पारिजात के ल्यावो।
चुन-चुन श्रीजिन अग्र चढ़ावो, मनवांछित फल पावो।
पारसनाथ जिनेश्वर पूजौं, रविव्रत के दिन भाई
सुख सम्पति बहु होय, तुरत ही आनन्द मंगलदाई।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय
पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा।

52

श्री विष्णुकुमार महामुनि पूजा

कमल केतकी पुष्प चढ़ाय, मेटो कामवाण दुःखदाय ।
दयानिधि होय, जय जगबन्धु दयानिधि होय ।
सप्त सैंकडा मुनिवर जान, रक्षा करी विष्णु भगवान।
दयानिधि होय, जय जगबन्धु दयानिधि होय ।
ॐ ह्रीं श्री विष्णुकुमार मुनिभ्यो कामबाणविध्वंशनाय
पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा ।





नैवेद्य पूजा

1



ग्रंथ वसुनन्दि श्रावकाचार :-
समय ११ वी शताब्दि...ग्रंथकर्ता - आचार्य वसुनन्दि
दहिदुद्धसप्पिमिस्सेहिं कमलमत्तएहिं वहुप्पयारेहिं।
तेवट्ठिवजणेहिं य बहुविहपक्कणभेएहिं ॥
रुप्पसुवण्णकंसाइथालणिहिएहिं विविह भरिएहिं।
पूयं वित्थारिज्जा भत्तिए जिणद पयपुरओ ॥
अर्थात् - दधि दुध और घी से मिले हुवे चावलों के भात से, शाक और व्यजनों से तथा अनेक तरह के पकवानों से सुवर्ण, चाँदी, कांसी आदि के थालों से जिन भगवान् के चरण कमलों के आगे पूजन करनी चाहिये।

2



ग्रंथ धर्मसंग्रह श्रावकाचार :-
केवलज्ञानपूजायां पूजितं यदेनकधा।
चारुभिश्चरुभिर्जैनपादपीठं विभूषये ॥

अर्थात - केवल ज्ञान के समय की पूजन में अनेक प्रकार से पूजन किये गये जिन भगवान् के चरण सरोजों को मनोहर व्यञ्जनादि नैवेद्यों से विभूषित करता हूं।

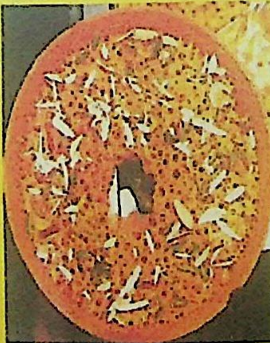
3



ग्रंथ इन्द्रनन्दि पूजासार :-
समय ११वी शताब्दि....ग्रंथकर्ता - आचार्य इन्द्रदिन
ॐ क्षीरशर्क्कराप्राय दधिप्राज्याज्यसंस्कृतम्।
सान्नाय्यं शुद्धपात्रस्थं प्रोत्क्षिपामि जिनेशिनः ॥

अर्थात् - दूध शर्क्करादि मधुर पदार्थोसे युक्त, दक्षि से बनाये हुवे अतिशय पवित्र नैवेद्य को जिन भगवान् के चरणों के आगे स्थापित करता हूँ।

4



ग्रंथ वसुनन्दि प्रतिष्ठासार :-
समय ११वी शताब्दि....ग्रंथकर्ता - आचार्य वसुनन्दि
स्वर्णादिपात्रविन्यस्तं दृग्मनोहारि सद्रसम्।
विस्तारयामि सान्नाय्यमग्रतो जिनपादयोः ॥
अर्थात् - सुवर्ण, चाँदी, रत्नादिकों के पात्रों में रखे हुवे, दीखने में नेत्रों को बहुत मनोहर और अच्छे-अच्छे रसों से बने हुये नैवेद्य से जिन भगवान् के चरणों के आगे चढ़ाता हूं। इसी तरह पद्मनन्दि पच्चीसी, जिन संहिता, नवकार श्रावकचारादि सम्पूर्ण शास्त्रों की आज्ञा है। इसलिए नैवेद्य में सब तरह की सामग्री चढ़ानी चाहिये।
वसुनन्दि स्वामी ने नैवेद्य पूजन के फल को कहते हुवे कहा है कि :-

नैवेद्य पूजा

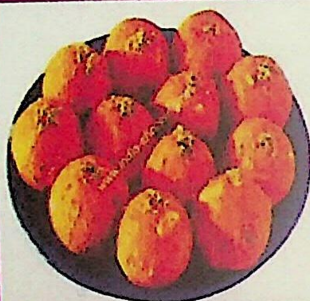
5



जायइ णिविज्जदाणेण सत्तिगो कंतितेयसम्पण्णो ।
लावण्णजलहिवेलातरंगसंपावीपसरीरो ।

अर्थात् :- जिन भगवान् के आगे नैवेद्य के चढ़ाने से शक्तिमान, कान्तिमान, तेजस्वी, अपूर्व सामर्थ्य का धारक तथा लावण्य समुद्र की वेला के तरंगो के समान शरीर का धारक होता है।

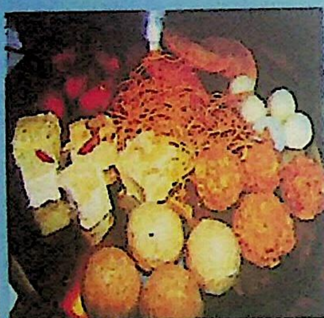
6



ग्रंथ – गद्यचिन्तामणि
ग्रंथकर्ता – श्री वादीभसिंह आचार्य ... पृष्ठ – १५
यस्माच्चसततजाज्वल्यमानजिपूज
चरुपचनपावकादुपजातभीतिरिव दूरपलायत कलिः ।

उस देशमें जिनेन्द्र देवकी पूजाका नैवेद्य बनानेके लिए सदा अग्नि प्रज्वलित रहती थी इसलिए उससे भयभीत होकर ही मानो कलिकाल दूर भाग गया था।

7



ग्रंथ – भावसंग्रह
समय १०वी शताब्दि...ग्रंथकर्ता – आचार्य देवसेन
दहिखीर सप्पि संभव उत्तम चरुरगहि पुज्जए जो हु ।
जिणवरपाय पओरुह सो पावइ उत्तमे भोए ॥

अर्थ – जो भव्य पुरुष दही, दूध, घी आदि में बने हुए उत्तम नैवेद्य से भगवान जिनेन्द्रदेव के चरण कमलों की पूजा करता है, उसे उत्तमोत्तम भोगों की प्राप्ति होती है।

8



ग्रंथ तिलोय पण्णत्ति
समय प्रथम शताब्दि...ग्रंथकर्ता – आचार्य यतिवृषभ
बहुविह – रसवंतेहिं, वर-भक्खेहिं विचित्त – रुवेहिं।
अमय – रच्छेहिं सुरा, जिणिंद – पडिमाओ महयंति ॥

अर्थ – वे देवगण, बहुत प्रकार के रसों से संयुक्त, अद्‌भूत रुप वाले और अमृत सद्धश उत्तम भोज्य-पदार्थोसे (नैवेद्य से) जिनेन्द्र प्रतिमाओं की पूजा करते है।

नैवेद्य पूजा

9



ग्रंथ उमास्वामी श्रावकाचार
समय दूसरी शताब्दि...ग्रंथकर्ता - आचार्य उमास्वामी
सच्छाल्यन्नादिकनैवेद्यैः प्राचर्यत्यनिश जिनान् ।
स भुनक्ति महासौख्यं पचेन्द्रियसमुद्भवम् ॥

अर्थ - जो भव्यजीव पकाये हुए अनेक प्रकार के नैवेद्य से भगवान जिनेन्द्र देव की प्रतिदिन पूजा करता है वह पाँचो इन्द्रियों से उत्पन्न हुए महासुखों का अनुभव करता है।

10



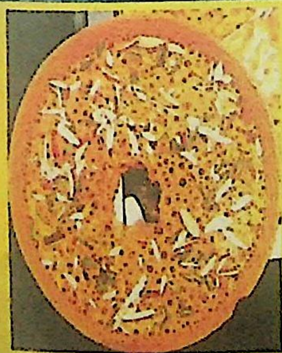
ग्रंथ - सावयधम्मदोहा
ग्रंथकर्ता - आचार्य योगीन्द्रदेव
णेवाइ दिण्णइं जिणहु जिय दालद्दु णासु ।
दुरिउण दुक्कई तहु णरहु लच्छिहि होइ ण णासु ॥१८७॥
अर्थ - जिनदेवको नैवेद्य चढ़ानेसे दारिद्र्यका नाश हो जाता है। उस मनुष्यके पास पाप नही ढूँकता और लक्ष्मी का भी नाश नही होता।

11



ग्रंथ सागर धर्मामृत
१२वीं शताब्दि...ग्रंथकर्ता - पण्डितप्रवर आशाधर
नैवेद्य चढ़ानेसे लक्ष्मीपतित्वकी प्राप्ति होती है।

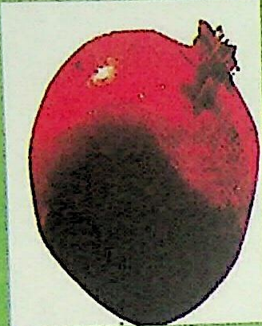
12



ग्रंथ प्रशनोत्तर श्रावकाचार
१५वीं शताब्दि....ग्रंथकर्ता - आचार्य श्री सकलकीर्ति
जो भव्य दूध, लड्डु पकवान शाली चावल बड़े आदि नैवेद्यसे भगवान् की पूजा करते है वे तीनो लोको मे उत्पन्न हुए समस्त भोगोको प्राप्त होते है।

फल पूजा

1



ग्रंथ तिलोय पण्णत्ति

समय पहली शताब्दि...ग्रंथकर्ता- आचार्य यतिवृषभ

दक्खा-दाडिम-कदली-णारंगय-माहुलिंग-चुदेहि ।

अण्णेहि पक्केहि, उलेहि पूजंति जिण्णाहं ॥१११॥

अर्थ - दाख, अनार, केला, नारंगी, मातुलिंग, आम तथा अन्य भी पके हुए फलों से वे देवगण जिननाथ की पूजा करते हैं।

2



भरत चक्रवर्ती के द्वारा भगवान आदिनाथ की फलो से पूजा

ग्रंथ आदिनाथपुराण प्रथम भाग ८७ सर्ग (२५२)

परिणत फल भेदैरामजम्बूकपित्थैः पनसलकुचमोचैर्दाडिमै र्मातुलिंगै ।

क्रमुक रुचिरगुच्छैर्नारिकेलैश्च रम्यैः गुरुचरणं सपर्यामातनोदाततश्रीः ।

अर्थ - जिनकी लक्ष्मी बहुत ही विस्तृत है, ऐसे राजा भरत ने पके हुए मनोहर आम, जामुन, कैथा, कटहल, बड़हल, केला, अनार, बिजौरा, सुपारियों के सुन्दर गुच्छे और नारियलों से भगवान के चरणो की पूजा की थी ।

3



फल पूजा का फल

ग्रंथ - सावय धम्म दोहा

ग्रंथकर्ता - आचार्य योगीन्द्रदेव

देइ जिणिंदहं जो फलइं तसु इच्छियइं फलंति ।

भोयधरहं गय रुक्खड़ा सयल मणोरह दिंति ॥१९०॥

अर्थ - जो जिनेन्द्र को फल चढ़ाता है, उसको यथेष्ट फल प्राप्त होता है। भोग भूमि के वृक्ष उसके सब मनोरथों को पूरा करते है।

4



ग्रंथ - वसुनन्दि श्रावकाचार

समय ११वी शताब्दि...ग्रंथकर्ता - आचार्य वसुनन्दि

जंबीर - मोच - दाडिम - कपित्थ पणस - णालिएरेहिं ।

हिंताल - ताल - खज्जूर - णींबू - नारंग - चारेहिं ॥४४०॥

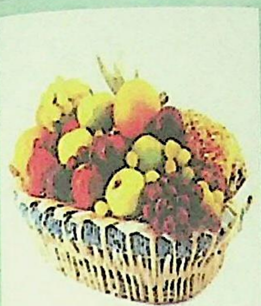
पूईफल - तिंदु - आमलय - जंबु - विल्लाइसुरहिमिट्ठेहिं।

जिणपयपुरओ रयणं फलेहि कुज्जा सुपक्केहिं ॥४४१॥

अर्थ - जंबीर (नींबू विशेष) मोच (केला) दाडिम (अनार) कैथा (कविट), पनस, नारियल, हिंताल, ताल, खजूर, नींबू, नारंगी, अचार (चिरोजी), पूंगीफल (सुपारी), तेन्दू, आँवला, जामुन, विल्वफल आदि अनेकप्रकार के सुंगधित मिष्ट और सुपक्व फलों से जिन चरणों के आगे अर्चना करें। अर्थात पूजन करें।

फल पूजा

5



ग्रंथ - भावसंग्रह
ग्रंथकर्ता - आचार्य देवसेन
पक्केहिं रसड्ढ समुज्जलेहिं जिणचरण पुरओ।
णाणा फलेहिं पावइ पुरिसो हिय इच्छियं सुफलं ॥४७७॥

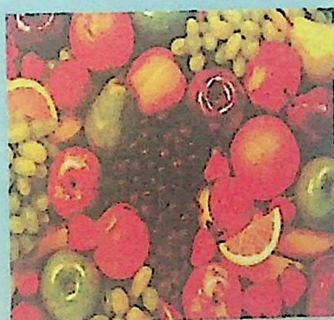
अर्थ - जो भव्य पुरुष अत्यन्त उज्ज्वल रस से भूरपूर ऐसे अनेक प्रकार के पके फलों से भगवान जिनेन्द्र देव के चरण कमलो के सामने समर्पण कर पूजा करता है वह अपने हृदय अनुकुल उत्तम फलों को प्राप्त होता है।

6



ग्रंथ - उमास्वामी श्रावकाचार
समय दुसरी शताब्दि...ग्रंथकर्ता - आचार्य उमास्वामी
आम्रनारिंग जंबीर कदल्यादि तरुद्भवैः ।
फलैर्यजति सर्वज्ञं लभत पीहितं फलम् ॥१७०॥
अर्थ - जो भव्य जीव आम, नारंगी, नींबू, केला आदि वृक्षो से उत्पन्न होने वाले फलों से भगवान सर्वज्ञ देव की पूजा करता है वह पुरुष अपनी इच्छा के अनुसार फलों को प्राप्त होता है।
फल देखने मे सुन्दर और मनोहर होना चाहिए।

7



ग्रंथ - प्रतिष्ठा पाठ
ग्रंथकर्ता - आचार्य जयसेन - पेज नं. २४-२५
ऋतुरसप्रसवैश्च रसादनवररसालसुदाडिमनागरैः ।
सलिलतः परिशोध्य हिरण्यजे विधृतिमंदिरजं
परिपूजयेत् ॥१०१॥
अर्थ - षट ऋतुके ससंयुक्त सरस सुन्दर नेत्रनिके प्यारे अमृत समान मिष्ट ऐसे फल जल शोधन करि सुवर्ण पात्रमें स्थापि स्वयंभू भगवानने पूजिये॥

8



ग्रंथ - पद्मनन्दि पंचविंशातिका
ग्रंथकर्ता - आचार्य श्री पद्मनन्दि
जिनपूजाष्टक
उच्चै फलाय परमामृतसंज्ञकाय, नानाफलैर्जिनपति परिपूजयामि ।
तद्भक्तिरेव सकलानि फलानि दत्ते, मोहेन तत्तदपि याचत एवं लोकः ॥८॥
अर्थ - सबसे उंचे तथा उत्तम अमृत है, संज्ञा जिनकी ऐसे उस फल के लिये अर्थात् मोक्षफलके लिये मैं जिनेन्द्र भगवान की भांति भांति के अनेक प्रकार के फलों से पूजा करता हूं

